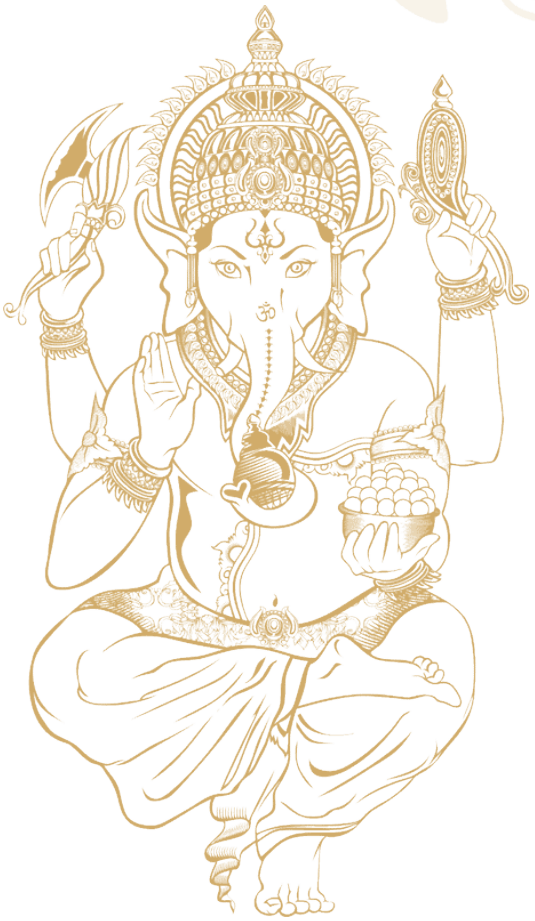

ABC

13 Apr 2026

03:46 PM

Hoshiarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121921301**

तिथि 13/04/2026 **समय** 15:46:00 **वार** सोमवार **स्थान** Hoshiarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:33
अक्षांश 31:30:00 उत्तर **रेखांश** 75:59:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:04 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	04:46:24 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:00:34 घं	योनि	सिंह
सूर्योदय	06:00:40 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	18:53:09 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2083	वश्य	मानव
शक संवत	1948	वर्ग	मार्जार
मास	वैशाख	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	वायु
तिथि	11	जन्म नामाक्षर	गे-गैरी
नक्षत्र	धनिष्ठा	पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
योग	शुभ	होरा	गुरु
करण	बालव	चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
मंगल 0वर्ष 1मा 0दि		पिंगला 0वर्ष 0मा 8दि	
मंगल		पिंगला	
	13/04/2026		13/04/2026
	14/05/2026		22/04/2026
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		13/04/2026
	13/04/2026		
चन्द्र	14/05/2026	मंगला	22/04/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			19:57:42	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	---	0:00			
सूर्य			29:16:27	मीन	रेवती	4	बुध	शनि	मित्र राशि	1.58	आत्मा	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			06:30:27	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	चंद्र	सम राशि	1.38	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	08:35:00	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	मित्र राशि	1.20	पुत्र	भ्रातृ	क्षेम
बुध			03:24:43	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	नीच राशि	0.90	कलत्र	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			22:34:46	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.40	भ्रातृ	धन	विपत
शुक्र			22:40:10	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	सम राशि	1.25	अमात्य	कलत्र	वध
शनि		अ	12:51:13	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	मंगल	सम राशि	1.22	मातृ	आयु	क्षेम
राहु			13:53:58	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु			13:53:58	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

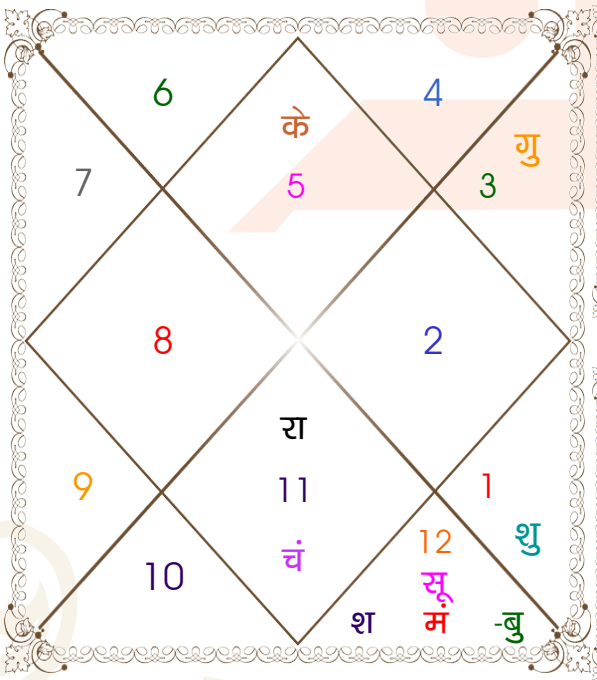

चन्द्र कुंडली

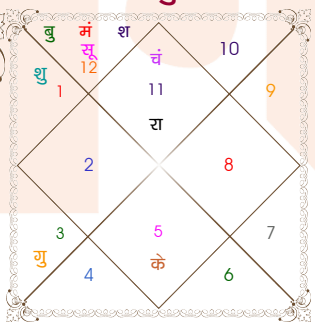

नवमांश कुंडली

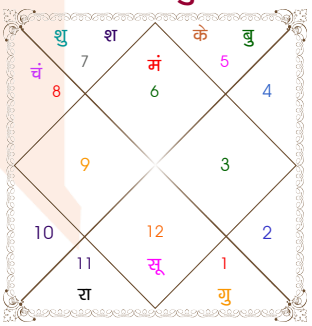

सर्वाष्टकवर्ग

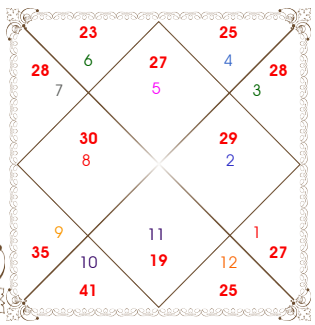

दशमांश कुंडली

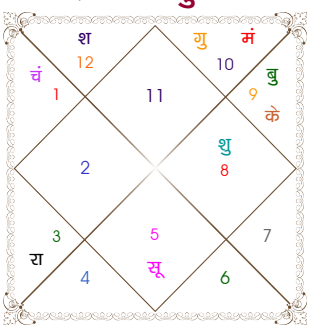

नक्षत्रफल

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी मध्य, वर्ग मार्जार, वर्ण शूद्र, गण राक्षस तथा योनि सिंह होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गे" अक्षर से होगा।

आप सदाचार सम्बन्धी नियमों का पूर्ण रूप से पालन करेंगी तथा चाल चलन से भी आप श्रेष्ठ रहेंगी। अतः समाज के लिए आप एक प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय एवं सम्माननीय महिला रहेंगी। अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही मधुर एवं कुशलता युक्त रहेगा। अतः अपनी व्यवहार कुशलता से आप सर्वजनों को प्रभावित करेंगी एवं सभी अन्य लोग आपकी बातों से प्रायः सहमत रहेंगे। धन धान्यादि से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी एवं धनाढ्य महिला के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। शारीरिक बल का आप में कभी भी अभाव नहीं रहेगा। साथ ही आपके मन में कोमल भावों की प्रधानता रहेगी अतः अन्य जनों के प्रति आपकी कृपादृष्टि रहेगी एवं यत्नपूर्वक इसका सहयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक गणमान्य महिला होंगी एवं समाज के सभी वर्गों में आपका प्रभाव भी व्याप्त रहेगा।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आप एक आशाशील महिला होंगी तथा जीवन में कभी भी निराशा का शिकार नही बनेंगी अतः मानसिक कष्टों से हमेशा सुरक्षित रहेंगी तथा जीवन में प्रायः सुखसंसाधनों से सुसम्पन्न रहकर प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीत के प्रति प्रारम्भ से ही आप की विशेष रूचि रहेगी तथा इस का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा एवं इस क्षेत्र में आपको ख्याति तथा प्रशंसा भी अर्जित हो सकेंगी। परिवार तथा बन्धुवर्ग को आप उचित सम्मान तथा स्नेह प्रदान करेंगी। आप स्वर्ण से निर्मित विभिन्न प्रकार के आभूषणों तथा अन्य बहुमूल्य रत्नों से भी किसी न किसी रूप में अवश्य समृद्धि को प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त एक गणमान्य या उच्चाधिकार प्राप्त महिला होने के कारण सभी लोग आपकी आज्ञा पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आपकी प्रवृति दानशीलता की रहेगी अतः आप यथाशक्ति दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्दों को अपनी इस प्रवृति से समय समय पर कृतार्थ करती रहेंगी। साथ ही शौर्यादि गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी एवं साहसपूर्वक अपनी सांसारिक समस्याओं का समाधान करेंगी। परन्तु धन के प्रति आपके मन में लोलुपता का भाव कुछ अधिक ही रहेगा। अतः इससे आपको कभी कभी अनावश्यक परेशानियां तथा समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका उन्नत रहेगी तथा ललाट एवं मुख भाग विस्तृताकार का होगा। साथ ही हाथ, पैर व कमर में भी स्थूलता रहेगी। आपके शरीर में अल्प मात्रा में रूक्षता विद्यमान रहेगी तथापि शारीरिक सौन्दर्य का आकर्षण पूर्ण रूप से विद्य मान रहेगा। आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता का भाव भी रहेगा एवं यदा कदा आप के अन्दर विद्रोह की भावना भी उत्पन्न हो जाएगी। धार्मिक वृति का भी आप पालन करती रहेंगी। आप में आलस्य की भी प्रधानता रहेगी। शिल्प या चित्रकारी में आप विशेष रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में विशेष उन्नति तथा ख्याति अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त यदा कदा आप मानसिक रूप से व्याकुल रहेगी।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।

सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विविध प्रकार के शास्त्रों का आप विस्तृत रूप से ज्ञानार्जन करने में सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में समाज में आप ख्याति प्राप्त करेंगी। साथ ही नाना प्रकार के कार्यों को करने में भी आप रूचिशील रहेंगी एवं इनमें दक्षता भी प्राप्त करेंगी। आप में हिंसक प्रवृति का अभाव रहेगा एवं प्रारम्भ से ही आपका स्वभाव शान्त होगा एवं शान्ति पूर्वक ही आप रहना पसन्द करेंगी। इसके अतिरिक्त शत्रुओं को पराजित करने में आप नित्य सफल रहेंगी तथा वे भी आपसे भयभीत रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

कभी कभी आप कठोर कार्यों को करने की ओर भी अग्रसर रहेंगी तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कठोर कार्यों को करने में अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। यात्रा करने तथा घूमने फिरने में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत भी करेंगी। धन के प्रति आपके मन में लोलुपता की भावना रहेगी अतः कई बार इस प्रवृति से आपको व्याकुलता की भी अनुभूति होगी। दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी आप में रहेगी तथा इसको प्राप्त करने के लिए आप प्रयत्न शील भी रहेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति विषम रहेगी एवं इसमें उतार चढाव आते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों के अनुलेपन तथा पुष्पों के श्रृंगार आदि करने में भी आप सतत रूचिशील एवं प्रयत्नशील रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक श्रेष्ठ एवं ख्याति प्राप्त विदुषी होंगी तथा समाज में पूर्ण सम्मान अर्जित करेंगी परन्तु अन्य विद्वानों को आप के द्वारा यथोचित मान सम्मान अल्प मात्रा में ही प्राप्त होग। आपका व्यवहार सुशीलता से भी युक्त रहेगा जिससे अन्य

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आपको जीवन में अधिकांश विजय तथा सफलताएं प्राप्त होती रहेगी जो अन्य जनों के लिए अनुकरणनीय रहेंगे। धनैश्वर्य से आप प्रायः सम्पन्न रहेंगी गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव रहेगा एवं अवसरानुकूल उनकी सेवा के लिए भी सर्वदा आप तत्पर रहेंगी। आपका परिवार भी विशाल रहेगा तथा जाति के लोगों के इष्ट कार्य के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी एवं उनको हमेशा अपना यथाशक्ति सहयोग प्रदान करती रहेंगी फलतः

जाति या वर्ग में आप सम्माननीया तथा आदरणीया समझी जाएंगी। इसके अतिरिक्त समाज में पुरूषवर्ग में भी आपका प्रभुत्व व्याप्त रहेगा साथ ही सर्वप्रकार के सद्गुणों से आप सुशोभित होकर जीवन में उनका पालन करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गरदन सामान्य से लम्बी रहेगी तथा नसे भी शरीर से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगी इसके अतिरिक्त समय समय पर आप अन्य शारीरिक रोगों से मित्रों कै प्रीत आपके मन में विशेष स्नेह तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनको सहयोग प्रदान करने के लिए आप तत्पर रहेंगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप में नैसर्गिक रूप से दानशीलता का भाव रहेगा अतः यथा शक्ति आप दीन दुःखियों तथा जरूरतमन्द लोगों को अपनी इस प्रवृति से कृतार्थ करती रहेंगी साथ ही अन्य जनों के कल्याणकारी कार्यों में भी आप पूर्ण रूपेण अपना सहयोग अर्पण करेंगी। अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगी। आपकी इस कृतज्ञता के भाव से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर होगी तथा आपकी बुद्धि छल प्रपंच से रहित सरलता के गुण से युक्त रहेगी। धन एवं विद्या का अर्जन करने के लिए आप हमेशा परिश्रमशील रहेंगी तथा अपने सत्कार्यों एवं स्नेहशील व्यवहार के द्वारा समाज में सम्मान तथा ख्याति दोनों को अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप स्वपरिश्रम से धनार्जनभी करेंगी एवं साहसपूर्वक जीवन यापन करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने की रहेगी। आप के मन में दया एवं करूणा की भी न्यूनता रहेगी परन्तु साहसी प्रवृति होने के

कारण अपने अधिकांश कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आप शीघ्र ही क्रोधित होने वाली भी रहेंगी। आपकी प्रवृति अन्य जनों से विवाद आदि करने की भी होगी तथा शारीरिक बल का भी आप में अभाव नहीं रहेगा।

जीवन में आप कभी कभी प्रमेह ओर उन्माद रोग से दुःखानुभूति भी कर सकती हैं। आपका शारीरिक सौन्दर्य का आकर्षण भी मध्यम ही रहेगा। इसके साथ ही आप कई बार कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगी अतः श्रोता एवं अन्य जन आपसे अप्रसन्न ही रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक वृति की महिला होंगी तथा धर्म का निष्ठा तथा श्रद्धापूर्वक अनुपालन करेंगी। साथ ही अच्छे कार्यों के करने में भी आपकी नित्य रूचि रहेगी एवं परिश्रम तथा यत्नपूर्वक इनको करने में तत्पर रहेंगी। आपके सद्गुणों से अन्य सामाजिक जन भी लाभ उठाएंगे तथा आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप नाना प्रकार के सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी तथा यत्पूर्वक इनका जीवन में अनुपालन करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। इसके अतिरिक्त कुल या परिवार की उन्नति एवं समृद्धि के लिए आप सर्वदा उद्यत रहेंगी एवं इस कार्य में आशातीत रूप से सफलता भी अर्जित करेंगी।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी

अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्दा नक्षत्र, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा प्रायः अशुभ फल देने वाले ही होगे अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, गंड योग, वणिज करण में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सावधानी रखें।

यदि आपके लिए समय ठीक नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर जी की उपासना करनी चाहिए तथा

शनिवार के नियमित रूप से उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु, लोहा, तिल, तेल कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से कम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होगी एवं शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा साथ ही अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों की वृद्धि होगी एवं अन्यत्र लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।